प्रातः सभा 17/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। रूहानी बाप बैठ समझाते हैं रूहानी बच्चों को। यहाँ बैठे हो, यह तो पक्का निश्चय हो गया है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार कि हम आत्मा हैं। एक बाप के बच्चे सभी ब्रदर्स हैं। जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी ब्रदर्स हैं। अभी सभी ब्रदर्स को बाप कहते हैं यहाँ बैठे हो तो मुझ पतित-पावन बाप को याद करते हो या बुद्धियोग कहाँ और तरफ भटकती है? माया बहुत भटकाती है। बाप फिर भी कहते हैं चारों तरफ से बुद्धियोग निकाल एक बाप को याद करो। माया भटकावेगी ज़रूर। न चाहते भी बुद्धि कहाँ न कहाँ भागती रहेगी। अभी तो बाप सम्मुख बैठे हैं तो तुम बच्चे जानते हो हम आत्माओं का बाप आया हुआ है, पावन बनने की ड्रिल सिखलाते हैं। 84 के चक्र का ज्ञान भी बाबा ने दिया है और यह भी बच्चे-2 कह समझाते हैं, जितना याद करेंगे तुम उतना ही पावन बनते जावेंगे। पावन बनने लिए याद बहुत ज़रूरी है। 84 का चक्र अभी पूरा होता है। अभी हम फिर से घर जाते हैं। अनेक बार हम घर गए हैं। याद की यात्रा से पवित्र बन नम्बरवार पुरुषार्थ (अनुसार) ही घर जाना है। सभी का बेहद का बाप एक ही है। जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी भाई-2 हैं। इसमें जिस्म की तो बात ही नहीं। अपन को भी आत्मा समझो। हम आत्मा पावन थीं, अभी पतित बनी हैं। फिर पावन ज़रूर बनना है। स्वीट बाप को, जीवन दान देने वाले बाप को वा हीरे जैसा जीवन बनाने वाले बाप को याद ज़रूर करना है। सिवाय बाप के और कोई को भी याद न करना है। अन्त में यह याद ही काम आवेंगे। भल कोई-2 वेद-शास्त्र आदि पढ़े हुए हैं तो वह दृष्टान्त निकाल समझाने की कोशिश करते हैं। जैसे बाबा भी कब-2 मिसाल देते हैं। ग्रंथ में है मनुष्य से देवता कैसे करत न लागे वार..... बेहद के बाप बिगर तो कोई भी मनुष्य से देवता बना न सके। मनुष्य सभी हैं पुरानी दुनिया में। तो नई दुनिया का लायक बाप ही बनाते हैं। तो ऐसे दैवीगुण भी धारण करनी है। बुद्धि में ज्ञान का मंथन चलता रहे। अपन को आत्मा समझो, यह भी बाप ने ज्ञान दिया है ना। अपन को आत्मा समझ बेहद के बाप को याद करो। फिर सृष्टि का चक्र भी समझाते हैं। बाप ज्ञान का सागर है। ज्ञान से ही सद्गति होती है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। यह ज्ञान देते हैं। बाप को याद करो। ज्ञान और विज्ञान। आत्मा को ज्ञान से परे जाना है। यह बुद्धि में रहना चाहिए। विज्ञान अर्थात् ज्ञान से परे। ज्ञान से परे अर्थात् शांतिधाम तो सभी जावेंगे। आत्मा का स्वधर्म है ही शान्त। घर भी है शांतिधाम। मनुष्यों को इन बातों का पता नहीं है। यह पारलौकिक बाप बैठ समझाते हैं। बच्चों मैं परमधाम से ड्रामा के प्लैन अनुसार आया हूँ तुमको ले जाने लिए। तुम पतित हो ना। कहते भी हैं, ड्रामा का प्लैन भी कहता है सभी पतित, विकारी हैं। विकार से ही पैदा होते हैं; इसलिए भ्रष्टाचारी कहा जाता है। यह है भ्रष्टाचारी, वह देवी-देवताएँ हैं श्रेष्ठाचारी। अभी हम भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी कैसे बनें वह बाप बैठ समझाते हैं। बाप को याद करो तो पवित्र श्रेष्ठाचारी बन जावेंगे। याद से ही श्रेष्ठ बनना है। बाप जो समझाते हैं वह धारण करना है। ऐसे नहीं यहाँ से बाहर जाते भूल जाना है। धंधा-धोरी आदि भी भल करो। बच्चे पूछते हैं माला का दाना कौन बनेंगे? बाप कहते हैं माला का दाना वह बनेंगे जिनकी कर्मातीत अवस्था होगी। सिवाय बाप के और कुछ याद न होगा। बहुत धनवान हैं, कारखाने आदि हैं तो वह सभी भूल कैसे सकते? तुमको कुछ भी याद न रखना है। जानते हो हम आत्माएँ बाप के बच्चे हैं। भाइयों को यह नॉलेज देते हैं। और कोई ममत्व नहीं है। मेरा-2 तो कुछ भी है नहीं। तुम जानते हो हम सभी रूहानी कनेक्शन में हैं। आगे देह को ही याद करते थे, आत्मा याद नहीं आती थी। सारी आयु देह को ही याद करते रहे। अभी बाप देही-अभिमानी बनाने का पुरुषार्थ कराते हैं। बाप जानते हैं बच्चे घड़ी-2 भूल जाते हैं। बाप टाइम भी देते हैं 8 घंटा इस रूहानी सेवा में दो। वह तो है हद की सर्विस। यह तुम सारे विश्व की सेवा करते हो। सारा दिन तो कोई याद कर न सके। आत्मा ही समझते रहे, शरीर है नहीं, फिर तो कोई काम भी कर न सको; इसलिए बाप टाइम देते हैं तुम बेहद की सर्विस करते हो। सभी को कहते हो अपन को आत्मा (समझ) बाप को याद करो तो तुम्हारे

सभी पाप मिट जावेंगे। यह भी जानते हो अपनी राजधानी स्थापन हो रही है। सभी तो सूर्यवंशी-चंद्रवंशी नहीं बनेंगे। यह भी समझते हो सतयुग से लेकर त्रेता तक बहुत थोड़े ही होंगे, फिर वृद्धि को पाते रहते हैं। जैसे बाप विचार-सागर-मंथर करते हैं ऐसे-2 तुम भी मंथन करते हो। बच्चों को सिखलाते हैं, करन-करावनहार बाप है ना। तो प्रैक्टिकल में करके सिखलाते हैं, ऐसे-2 करो। खुद भी याद करते हैं, तुमको सिखलाने लिए समझाते हैं। मुझ बाप को याद करो, और सभी को भूल जाओ; परन्तु यह पिछाड़ी की अवस्था होगी। अभी नहीं भूल सकेंगे। पुरुषार्थ करते-2 आखरीन में तुम्हारी विजयमाला बनती ही है। सतयुग-त्रेता में जो आते हैं वही विजय पहनते हैं। सभी तो नहीं आते। कोई तो बहुत देरी से आते हैं। यह सारी माला बन रही है। तुम्हारी आत्मा जानती है हम रुद्र बाप के माला में पिरोये रहेंगे फिर नम्बरवार आवेंगे। ड्रामा बड़ा एक्युरेट बना बनाया है। कल्प-2 यह एक-दो के पिछाड़ी आते रहते हैं। सभी फिर इकट्ठे जावेंगे। नाटक में भी पार्ट बजाने नम्बरवार आते हैं। सभी इकट्ठे नहीं आ जावेंगे। तुम आत्माएँ भी एक्टर्स हो। आत्मा यहाँ शरीर धारण कर पार्ट बजाती है। एक्टर्स का रहने का स्थान ब्रह्मलोक है। यहाँ पार्ट बजाने लिए शरीर लेते हैं। यह सभी बातें तुम्हारी बुद्धि में है और कोई की बुद्धि में नहीं है। हम स्वीटहोम के रहने वाले हैं। वह घर नहीं समझते। कहते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। जैसे सागर से बुदबुदा निकल सागर में लय हो जाता है। हम भी ब्रह्म में लय हो जावेंगे। ब्रह्म ही ब्रह्म है। जहाँ देखो ब्रह्म की ब्रह्म। ब्रह्म को ही ईश्वर समझते हैं। यह बातें उन्हों की बुद्धि में बैठेगी ही नहीं। तुमको ही समझेंगे यह उल्टा बताते हैं। तुम उनको उल्टा समझेंगे। उन्हों का तो धर्म ही अलग है। हाँ, शांतिधाम तो सभी जावेंगे। बाकी पार्ट उनका अलग है। एक-एक आत्मा को अपना पार्ट मिला हुआ है, इनको ही वण्डर कहा जाता है। कितना महीनता में जाना होता है। आत्मा कितनी छोटी है। जैसे बाप ज्ञान का सागर है वैसे तुम भी ज्ञानवान बनते हो। वह है भक्तवान, तुम हो ज्ञानवान। भक्तवान माना रात के रहने वाले। तुम हो ज्ञानवान दिन के रहने वाले। तुम समझते हो हम दिन में भी रहने वाले हैं, रात में भी रहने वाले हैं। आधा कल्प सुखधाम, आधाकल्प दुखधाम में तुम रहते हो। एक्युरेट मिनट, सेकण्ड आदि सभी हिसाब बताया जाता है। एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। उनको कहा जाता है दूरंदेश। तुम्हारी बुद्धि जानती है हम आत्माएँ स्वीटहोम में रहने वाले हैं। तुम्हारे सिवाय और कोई की बुद्धि में नहीं है। हम इतना समय वहाँ रहते हैं फिर पार्ट बजाने आते हैं। यह बातें अभी तुम सुनते हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं। कोई तो अच्छी रीत धारण करते हैं, कोई भूल जाते हैं। बाप जो बीजरूप है उनको झाड़ की नॉलेज है। यह नॉलेज और कोई भी मनुष्य मात्र में नहीं। वह तो है ही शूद्र सम्प्रदाय। तुम हो ब्राह्मण सम्प्रदाय। ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ। यह ज्ञान सिर्फ तुम्हारे पास है। आस्ते-2 यह तुम्हारा झाड़ भी वृद्धि को पाता जावेगा। तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है। तो बाप समझाते हैं सिवाय एक के और सभी भूल जाना पड़ता है। तुम बच्चों के पास कुछ भी है नहीं जो याद आए। कोई बाल बच्चे नहीं, धन नहीं। यह शरीर है, उनका भी भान मिटाना है। अपन को आत्मा समझना है। बस, और कुछ है नहीं। शरीर ही नहीं तो कुछ भी याद रह न सके। पूरा आत्म-अभिमानी बनना है। मेरे पास कुछ भी है नहीं जो अन्त में याद पड़े। गायन है ना अन्त काल जो स्त्री सिमरे..... अगर अपन पास ऐसी चीज़ होगी तो वह सिमरण में आवेंगे ज़रूर। तुम्हारा तो कुछ भी है नहीं। क्यों तुमको फलानी चीज़ याद आती? तुम तो दे दिया ना फिर याद क्यों आनी चाहिए। मेरे(रा) है ही नहीं। ..... अगर अपना समझेंगे तो फिर याद आता रहेगा। बाप को दे दिया ना फिर तुमको ख्याल क्यों आता? तुम भूल जाओ। बाबा ने कहा रखा है तो तुमको क्यों याद पड़ता है? याद आती है तो नुकसान कर देगी। तुमको सभी भूल जाना है। पहले-2 तुम आए, तुम्हारे पास कुछ भी नहीं था। तुमको नई राजाई मिलती है, पुरानी कुछ है नहीं। जैसे मनुष्य मरते हैं तो करनीघोर को पुराना चीज़ सभी दे देते हैं ना। अभी तुमने भी इस ख्याल

से दिया है। हमारे पास कुछ नहीं। मैं तो बाप का बच्चा हूँ। पुरानी चीज़ कोई है नहीं। शरीर भी नहीं। नई चीज़, नई दुनिया। वहाँ जाना है। वहाँ हम हीरे-जवाहर के नए महलों में जावेंगे। तुम पुरुषार्थ करते ही हो नई दुनिया का राज्य लेने। कहते हैं हम ना॰ बनेंगे। खुशी की बात है ना। पुरानी कोई भी चीज़ याद न आए तब माला के दाना बनेंगे। 16108 के बड़े-2 माला मंदिरों में होते हैं। माला के दाना तो बहुत बनेंगे। जितना नज़दीक पहले आवेंगे उतना ही सुख पावेंगे। जो पीछे आते हैं वह इतना सुख नहीं पाते। सुख थोड़ा पाते हैं तो दुख भी थोड़ा पाते हैं। तो बाप समझाते हैं यह ख्याल रखो, पिछाड़ी में कुछ भी याद न आए। अर्पण किया हुआ चीज़ याद न आए। बाप कहते हैं मैं ऐसी चीज़ लेता ही नहीं हूँ जो पिछाड़ी में रह जाए और भरकर देना पड़े। मैं तो गरीब निवाज़ हूँ ना। गरीब बिचारों पास है ही क्या। बच्चे भी समझते हैं हमारा तो कुछ भी है नहीं। फिर माया किसको तंग करती है तो भागन्ति हो जाते हैं। फिर मांगते हैं कि हमने जो दिया है वह दियो(दो)। इसके लिए हरिश्चन्द्र का मिसाल है ना। दान देकर फिर मांगते हैं, ऐसे भी हैं। माया पूरा डंस लेती है। एकदम माया तवाई बना देती है। प्रतिज्ञा भी करते हैं बाबा हम तो आपके हैं, चाहे मारो चाहे प्यार करो। यह हस्ताना कब भूलेंगे नहीं। ऐसे बाप को कब नहीं छोड़ेंगे; परन्तु माया हरा देती है। 10/20 वर्ष बाद भी कहते हैं हमारा दिया हुआ वापस करो। अरे, तुमने कणा दाना दिया अथाह लेने लिए फिर कहते हो हमने दिया! शर्म नहीं आता? कौड़ी देते हो, हीरे लेते हो, फिर भी तुम दिए हुए कौड़ी मांगते हो। तुमने इतना खाया वह भी निकालो पेट से। सर्विस कहाँ की, यह तो डिससर्विस करते हो ना। डिस-सर्विस करने से इतना दिन जो खाया वह भी तुम्हारे ऊपर कर्जा चढ़ गया। तुम जाकर दासियों के भी दास बनेंगे। बाबा लॉ(कानून) समझाते हैं। प्रैक्टिकल में ऐसी-2 बातें होती हैं। बेड़ा पार होने बदली और ही डूब जाती है। बेड़ा पार होने का मतलब है यह ल॰ना॰ बनना। फिर माया का बनने से बेड़ा डूब जाता है। जाकर डेड चमार बनते हैं। गाया हुआ भी है आश्चर्यवत कथन्ति, सुनन्ति, सुनावन्ति..... फिर अहो मम् माया तुमको गिरावन्ति। कितनी बलवान है। तुम भी समझते हो बात बिल्कुल ठीक है। यह कब दिल में आना न चाहिए हमने दिया। ख्याल आया तो घाटा पड़ जावेगा। बाप से तो तुम लेने आए हो ना। यह क्यों कहते हो हम देते हैं? हिसाब करो, वहाँ क्या जाकर बनेंगे। कोई के पास है ही 10 पैसा उसमें एक पैसा भी देते हैं तो महल बन जाते हैं। सुदामा का मिसाल है ना। चावल मुट्ठी भी सच-2 को ले आते हैं। यह भी हमारा पड़ा रहे। हमको महल मिल जावेगा। तो बाप खुश होते हैं। वाह! इनको तो ज़रूर महल मिलनी है। बहुत प्यार, शुभ भावना से ले आते हैं। हैउ, ज़ीरा, चना, चौंरा भी ले आते हैं। बाबा सुदामा मिसल यह हम भी डाल देते हैं। अहो भाग्य उन बिचारों की। जो है, ले आते हैं तो कितना ऊँच बनेंगे। तुम बाप के बने हो तो यज्ञ से परवरिश होती है। बाहर में तुमको फर्स्ट क्लास अच्छे कपड़े आदि मिलते हैं, वह यज्ञ में डालकर बदली कर लो। हम फिर वह अच्छी-2 चीज़ें साहुकारों को दे देंगे। जो पहनने वाले हैं वह खुश हो जावेंगे। रखकर क्या करेंगे? सौगात दी जाती है। अच्छी चीज़ देख खुश होंगे। कदम-2 पर हमारी वही एक्ट चलती है जो कल्प-2 चलती है। तुम्हारे कदम-2 में पदम है कल्प-2 मिसल। इसलिए देवताओं के पांव में पदम दिखाते हैं। इसका भी अर्थ होगा ना। तुम्हारा कदम-2 जो पास होता है वह पदमों की आमदनी होती है। तुम आते ही हो पदमापदमपति बनने। इतने तुम महान सौभाग्यशाली हो। तुम्हारा पुरुषार्थ ड्रामा प्लैन अनुसार ही चलता रहता है। ड्रामा पुरुषार्थ कराती रहती है। एक तो तुम परवश हो, रावण के राज्य में हो ना फिर ड्रामा के भी परवश हो। बाप कहते हैं मैं भी ड्रामा के वश हूँ। ड्रामा अनादि-अविनाशी बना हुआ है। वह कोई के वश नहीं है। ड्रामा कब बना? ड्रामा तो अनादि चलता रहता है। ड्रामा में नम्बरवन मत मिलती है तुमको ईश्वर की, जिस ईश्वरीय मत से तुम देवता बनते हो। मनुष्यों की मत छी-छी बनाती है। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।